Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-219-221

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 219-221
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

कोमल भारती

शोधार्थी, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय.

Corresponding Author :

कोमल भारती

शोधार्थी, तमिलनाडु केन्द्रीय विश्वविद्यालय.

नामवर सिंह की आलोचना में निहित अन्तर्दृष्टि

समकालीन कविता आलोचना के इस युग में नामवर सिंह की कोई स्वतंत्र कविता आलोचना पर पुस्तक नहीं आई परंतु समकालीन कविता आलोचना के दिशा-निर्धारण में उनकी भूमिका केंद्रीय रही है। कविता आलोचना की स्वतंत्र पुस्तक के बिना भी वह इस काल में सबसे अधिक सक्रिय आलोचकों में से एक हैं इसमें कोई शंका नहीं। नामवर सिंह कविता आलोचना से शुरु करके संपूर्ण आलोचना की ओर बढ़ते हैं। गद्य साहित्य आलोचना में भी उनकी कविता आलोचना से विकसित दृष्टि का परिणाम दिखता है। नामवर सिंह वाचिक आलोचना की परंपरा से भी हैं। वे अपने व्याख्यानों, भाषणों और वार्ताओं के जरिए आलोचना को एक खास दिशा की ओर लेकर गए। उन्होंने 'आलोचना' पत्रिका के जरिए कलावादी आलोचना की शाखा को प्रगतिशील मार्क्सवादी आलोचना के समानान्तर स्थापित करने का कार्य किया। वे हिन्दी साहित्य में प्रगतिशील विचार के महत्व का रेखांकन करते रहे हैं। नामवर जी अपने संपूर्ण आलोचनात्मक प्रयास में अपने लक्ष्य को लेकर स्पष्ट नजर आते हैं। उनकी यह स्पष्टवादिता हिन्दी आलोचना को प्रभावित करती है।

नामवर सिंह अपनी पहली पुस्तक 'छायावाद' में मार्क्सवादी पद्धति से विवेचन करते हुए काव्य संदर्भों में उसकी सामाजिकता बतलाते हैं। आधुनिक कविता के आगमन के बाद भी आलोचना में पुराने काव्यशास्त्रीय मानंदंडों का प्रवल होना और कविता को नवीन के बरअक्श पुराने प्रतिमानों के आधार पर समझना कविता, उसकी आधुनिकता, उसकी समसामयिक सृजना तथा उसके विकास के प्रति अन्याय था। छायावाद के आधार पर नामवर सिंह कविता आलोचना के पुराने प्रतिमानों की सीमा की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। नामवर सिंह के छायावाद के विवेचन के बारे में निर्मला जैन का कथन है, "उनकी मौलिकता विषय के चुनाव में नहीं, उस दृष्टि में निहित रहती है, जिससे वे किसी भी नए-पुराने विषय से मुखातिब होते हैं। यहाँ भी उन्होंने, 'आरंभ में सामाजिक पृष्ठभूमि देकर फिर किसी काव्य-प्रवृत्ति पर विचार करने की बंधी-परिपाटी' को छोड़कर 'छायाचित्रों में निहित सामाजिक सत्य का उद्घाटन करने' का

लक्ष्य सामने रखा। ज़ाहिर है यह छायावाद को मुख्य रूप से कवि की निश्छल आत्माभिव्यक्ति या व्यक्तिनिष्ठ काव्याभिव्यक्ति स्वीकार करने वाली या प्रकृति में अध्यात्म खोजने वाली पूर्ववर्ती आलोचना पद्धति से स्पष्ट प्रस्थान भेद था"[1] उनकी छायावाद की ये आलोचना पद्धति नई कविता की आलोचना के लिए राह आसान बनाती है और साथ ही आगे की कविता में हो रहे बदलाव की द्वन्द्वात्मकता को समझने के लिए आलोचना की एक विशेष पद्धति के आविष्कार के महत्व को रेखांकित करती है। काव्यालोचना में छायावाद से ही कविता की संरचना और अभिव्यंजना विषयक बहस शुरु हो गई थी। प्रसाद, निराला और पंत छायावादी काव्य की भिन्नता और कविता में परिवर्तन के बहस पर लिख रहे थे। प्रगतिशील लेखक संघ के आने के साथ समीक्षकों ने कविता की प्रगतिशीलता की ओर ध्यान देना आरम्भ कर दिया। शिवदान सिंह चौहान और रामविलास शर्मा ने मार्क्सवाद को मुख्य आलोचना-दृष्टि के रूप में खड़ा किया। परन्तु कविता आलोचना अपनी पुरानी जड़ताओं से स्वतंत्र नहीं हो रही थी। ऐसे में अज्ञेय ने प्रयोगवाद का सूत्रपात किया और इस प्रयोगवाद का अंजाम 'नई कविता' के रूप में हुआ। नई कविता के काल में भी रस रूप छन्द की चर्चा बराबर कविता आलोचना में बनी रही। इस समय मुक्तिबोध, अज्ञेय, लक्ष्मीकांत वर्मा और विजयदेव नारायण साही आदि कवि चिन्तकों ने कविता और आलोचना की नवीन समझ के निर्माण की जरूरत को रेखांकित किया। इस समय विश्वयुद्ध के बाद मार्क्सवाद बनाम शीतयुद्ध की विचारधारा जो हिन्दी कविता में सक्रिय थी उस बारे में नामवर सिंह ध्यान दिलाते हैं। कविता में वैचारिक बहसों को देखा जा सकता था। ऐसे ही बहसों के परिणामस्वरूप नामवर सिंह कृत 'कविता के नए प्रतिमान' आलोक में आया। हालांकि नई कविता को आधार बना कर इस किताब को रचा गया था पर लेखक छायावाद में जा कर ही इस बहस की जड़ को पकड़ते हैं। यह सर्व विदित है कि आधुनिक कविता का सही आरम्भ छायावाद से ही होती है और नई कविता में ही कविता आप को पुरानी जड़ताओं से विच्छेद कर पाती है। लेकिन कविता के आलोचक कविता के लिए नए प्रतिमानों को खोज नहीं पा रहे थे। आलोचक आलोचना के लिए नवीन दृष्टि का आविष्कार करने में भी असमर्थ पड़ रहे थे। यह स्थिति कविता आलोचना में नवीन मानदण्डों और प्रतिमानों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। इस आवश्यकता को पूरा करने का एक प्रयास है 'कविता के नए प्रतिमान' रूप में सामने आया।

इस पुस्तक के प्रथम खंड में नामवर सिंह कविता की आलोचनात्मक परेशानियों का परिचय कराते हुए कविता के बदलते रूप और उसके विश्लेषण की समस्याओं का जिक्र करते हैं। कविता की समीक्षा में लगातार पुराने प्रतिमानों के उपयोग से कविता के महत्वपूर्ण पक्षों का आविष्कार और उसकी विवेचन बाधित हो रहे थे। कविता अगर नई कविता बनी तो उसकी आलोचना में भी प्रतिमान नवीन होने चाहिए। कविता के प्रतिमान की खोज कविता आलोचना में रस के सिद्धान्तों की अप्रासंगिकता सिद्ध करने के साथ उसके अर्थ पर अधिक बल देती है। कविता का इस प्रतिमानीकरण आगामी कविता के लिए भी कविता और आलोचना के सम्बन्धों के अन्वेषण का मार्ग सुगम करती है। अरुण कमल कहते हैं कि कविता के नए प्रतिमान हिंदी आलोचना में, कदाचित आलोचना मात्र में, एक ऐसी किताब है जो अपने समय की कविता के पक्ष के साथ सभी श्रेष्ठ कविता के पक्ष में उठा हुआ हाथ है। यह कविता के पक्ष में इसलिए है क्योंकि यह जड़ता का विरोधी है।

काव्य भाषा और सृजनशीलता, काव्य बिम्ब और सपाटबयानी, काव्य संरचनाः प्रगीतात्मक और नाटकीय, विसंगति और विडंबना, अनुभूति की जटिलता और तनाव, ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति, परिवेश और मूल्य आदि विषयों पर दूसरे खंड में नामवर सिंह चर्चा करते हैं। नई कविता जिन प्रश्नों का सामना कर रही थी यह खण्ड उन प्रश्नों की पड़ताल भी है। यह खंड आगामी कविता को यह बताती है कि आलोचना के मानदण्ड कविता की जटिलता और उसके अन्तर्विरोधों में भी शामिल हो सकते हैं। ऐसा करके वे पुराने सवालों को नजरअंदाज़ नहीं करते। पुराने का उपयोग करके नवीन का निर्माण करते हैं। इसमें वे प्राचीन से अर्वाचीन को साथ लेके चलते हैं। नई कविता के बाद की आलोचना के लिए 'कविता के नए प्रतिमान' के प्रतिमान नवीन प्रतिमानों के निर्माण में उपयोगी सिद्ध होते हैं। यह प्रतिमान लगातार प्रतिमान की खोज की आवश्यकता की भूमिका को स्पष्ट करते हैं। नामवर सिंह आलोचना में अर्थ

निरुपण पर बल देते हैं। कविता को अर्थ के जरिए ही प्राप्त किया जाता है। यदि अर्थ पाठक के लिए सरलता से प्रकट नहीं हो पा रहे हैं तो आलोचना को अर्थ का संवेदनशील उद्घाटन करना होगा। वे लिखते हैं, "आलोचना अर्थ मीमांसा पर आधारित मूल्य-निर्णय है। कविता के रूप में दिए गए शब्दों के अर्थवलय का अधिकाधिक संवेदनशील और प्रमाणिक उद्घाटन ही आलोचना की पहचान है।"[2] मृत्युंजय नामवर सिंह की दृष्टि के बारे में लिखते हैं, "हिंदी आलोचना में कैनन-निर्माण की प्रक्रिया में 'नई कविता' के भीतर ही अलग-अलग धाराएँ गतिशील थीं, जिन्हें सिर्फ इस आधार पर कि किसी 'बाहरी' का इस्तेमाल काव्य के प्रतिमान के रूप में नहीं होगा, नहीं बाँटा जा सकता। जहाँ नामवर जी इनमें सौंदर्यबोध के आधार पर अंतर्विरोध देखते हैं- वहीं मुक्तिबोध सौंदर्यबोध के अलावा 'नई कविता' के अंतर्विरोधों को बड़े फलक पर चिह्नित करते हैं।"[3] इन्हीं कविता के अन्तर्विरोध के बीच से नामवर सिंह कविता के नवीन संदर्भों को खोज निकालते हैं। नामवर जी मुक्तिबोध की कविता के माध्यम से तमाम अंतर्विरोधों के जवाब स्पष्ट करते हैं। अकारण ही मुक्तिबोध कविता के नए प्रतिमान के केन्द्र में नहीं हैं। कविता के प्रतिमान परवर्ती कविता के मार्गदर्शक के रूप में मुक्तिबोध को स्थापित करती है।

कविता के नए प्रतिमान पर कुछ विवाद भी हुए। जो सवाल खडे हुए उनमें रूपवाद के आरोप, संरचनात्मक विवेचना के आरोप और नई कविता की एक पूरी धारा की उपेक्षा के आरोप तथा अन्तर्विरोध के भी आरोप हैं। "इसलिए 'प्रतिमान' मार्क्सवादी आलोचना को बचाने, विकसित करने के प्रयत्न में मार्क्सवादी आलोचना के मूल सिद्धांतों से ही अलग छिटक-छिटक पड़ते हैं।"[4] लेकिन कविता के लिए आलोचकीय प्रतिमान के निर्माण का कदाचित प्रथम प्रयास भी नामवर सिंह ने किया है। नामवर सिंह के योगदान के माध्यम से ही समकालीन कविता आलोचना पुराने मानदण्डों की जड़ता से स्वतंत्र होती है।

निष्कर्ष- यह शोधपत्र समकालीन हिंदी कविता-आलोचना में नामवर सिंह की केंद्रीय भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यद्यपि उनकी स्वतंत्र कविता-आलोचना पर कोई पृथक पुस्तक नहीं आई, तथापि उन्होंने अपने व्याख्यानों, लेखों तथा 'आलोचना' पत्रिका के माध्यम से हिंदी आलोचना को नई दिशा प्रदान की। उनकी आरंभिक कृति छायावाद' में मार्क्सवादी पद्धति के सहारे काव्य की सामाजिक पृष्ठभूमि का उद्घाटन करते हुए उन्होंने परंपरागत काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों की सीमाओं को रेखांकित किया। यह दृष्टि आगे चलकर आधुनिक और नई कविता की आलोचना के लिए आधारभूमि तैयार करती है।

नई कविता के दौर में जब रस, छंद और रूपकेंद्रित मानदंड प्रबल थे, तब नामवर सिंह ने कविता के बदलते स्वरूप के अनुरूप नवीन प्रतिमानों की आवश्यकता पर बल दिया। उनकी कृति 'कविता के नए प्रतिमान' इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है, जिसमें उन्होंने काव्य-भाषा, संरचना, बिंब, विसंगति, विडंबना, अनुभूति की जटिलता तथा परिवेश-मूल्य संबंधों पर विमर्श करते हुए अर्थ-मीमांसा को आलोचना का केंद्रीय आधार बनाया। उनके अनुसार आलोचना शब्दों के अर्थवलय का संवेदनशील और प्रमाणिक उद्घाटन है।

यद्यपि इस पुस्तक पर रूपवाद और अंतर्विरोध संबंधी आरोप लगे, फिर भी यह कृति हिंदी आलोचना को जड़ता से मुक्त करने और नवीन मानदंडों के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध हुई। मुक्तिबोध की काव्य-दृष्टि को केंद्र में रखकर उन्होंने समकालीन कविता के अंतर्विरोधों की व्याख्या की। निष्कर्षतः, नामवर सिंह का योगदान हिंदी कविता-आलोचना को वैचारिक स्पष्टता, नवीन प्रतिमानों और आलोचनात्मक सक्रियता प्रदान करने में निर्णायक रहा है।

सन्दर्भ सूची :

1. छायावाद के बहाने नामवर सिंह : एख मूल्यांकन, निर्मला जैन, पृष्ठ 56
2. कविता के नए प्रतिमान, नामवर सिंह, पृष्ठ 171
3. हिन्दी आलोचना में कैनन निर्माण की प्रक्रिया, मृत्युंजय, पृष्ठ 146
4. हिन्दी आलोचना में कैनन निर्माण की प्रक्रिया, मृत्युंजय, पृष्ठ 153